160

Impact Factor : 2.132
Registration No. 206
UGC Serial No. 42685
ISSN :- 2348-6228

CURRENT JOURNAL

Journal For All Research

An International Peer Reviewed Research Refereed Quarterly Journal

Editor in Chief
Prof. J. N. Singh
Department of Sociology
Faculty of Social Science
Banaras Hindu University
Varanasi

Editor
Dr. Rajeev Kumar Srivastava
Dept. of History
Faculty of Social Science
Banaras Hindu University
Varanasi

Volume 5.3 No.-17 (Jan.-March. 2018)

Published by
Vishal Bharat Sansthan
Varanasi (U.P.) India

CONTENT

समावेशी विकास और शिक्षा डॉ० मनोज कुमार	.....	1-2
Effectiveness Of Branding Strategies In Fast Moving Consumer Goods (Fmcg) Dr. Bijaya Thakur	.....	3-5
दण्डनीति औचित्य–विमर्श : महाभारत के आलोक में डॉ० रश्मि कुमारी	.....	6-10
आलोचना की देषज परम्परा डॉ० वीना सुमन	.....	11-15
सुशासन : भारत में समावेशी विकास का आवश्यक शर्त दीपमाला श्रीवास्तव	.....	16-18
भीष्म साहनी का रचना संसार : मानवीय मूल्य अनुपम पाण्डेय	.....	19-21
The Symbolism of Stupa Shweta Singh	.....	22-24
कुशीनगर की ऐतिहासिक स्थिति मधुसूदननाथ त्रिपाठी	.....	25-27
नासिरा शर्मा के कथा-साहित्य में स्त्री मोती चन्द प्रसाद	....	28-31
मध्यप्रदेश के दुर्गों एवं महलों का ऐतिहासिक अध्ययन डा० प्रिया श्रीवास्तव	....	32-35
Religion, Rationality and Bollywood Dr. Rajesh Kumar	....	36-40
Thoughts about Air Protraction in Vedic Literature Dr. Bhagyashree S.Bhalwatkar	....	41-43
Role of Irrigation Facilities on Agricultural Production In Bihar Amarjit Singh	....	44-53
बिहार पंचायत राज अधिनियम की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि प्रिया सुमन डॉ० कल्पना मिश्रा	....	54-57
हिन्दी साहित्य में स्त्री उत्पीड़न एवं मुक्ति की चेतना की पड़ताल हरिश्चन्द्र डॉ प्रमोद कुमार सिंह	....	58-61
मुंशी प्रेमचन्द के कथा साहित्य में किसान की स्थिति पंकज यादव डॉ० प्रमोद कुमार सिंह	....	62-65
Genesis and Classification of NGOs Dr. Vivek Kumar Gupta	....	67-71
Urban Local Government in India: Problem and Prospects Shweta Chaurasia	....	72-75
कमलेश्वर के उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय एक अध्ययन राघवेंद्र सिंह डॉ० प्रमोद कुमार सिंह	....	76-80
Sociological Aspects of Religious Beliefs of Tharu Tribe Dr. Naresh Singh	....	81-85
कार्यांजित महिलाओं की दोहरी भूमिका समायोजन" डॉ० निरुपमा	.....	56-88
विद्यार्थियों में नैतिक गिरावट के कारणों की समीक्षा शरदचन्द	.....	89-92

CONTENT

- आत्मविश्वास का छात्रों के उपलब्धि अभिप्रेरणा पर प्रभाव का अध्ययन 93-95
  डा० संजय कुमार स्वर्णकार
- श्रीमद्भगवद्गीतायं (सनातन) धर्मेर विविध रूप 96-101
  (सम्पूर्ण गवेषणापत्र)
  अध्यापिका विन्दु लाहिड़ी
- जे. कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचार 102-106
  कृष्ण कुमार भारती
- मध्य गंगा घाटी क्षेत्र की भौगोलिक पृष्ठभूमि 107-113
  मुकेश चन्द्र पटेल
- भाषावैज्ञानिक वैदिक अर्थ मीमांसा परम्परा 114-117
  अजय कुमार मिश्र
  प्रो० राजनाथ भट्ट
- अहिंसा, अनेकान्त और अपरिग्रह जैन दर्शन का आधार स्तम्भ 118-120
  अरबिन्द कुमार सिंह
- जैन धर्म – दर्शन में मार्दव धर्म का महत्त्व 121-123
  चन्द्रप्रभा कुमारी
- तत्त्व चिन्तन का समीक्षात्मक अध्ययन (जैनदर्शन के संदर्भ में) 124-126
  कुमारी उदिता
- मध्य 18 वीं–19 वीं शताब्दी में लखनऊ में कार्यरत प्रमुख भारतीय चित्रकारों की कलाकृतियाँ 127-130
  आयुष मिश्र
- **Data Security Challenges in the Age of Internet of Things** 131-136
  Mayank Tyagi
- हिंदी भाषा में भोजपुरी शब्दों का कोड मिश्रण 137-142
  जयप्रकाश गुप्ता
- भारतेन्दु के साहित्य में सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना 143-147
  डॉ० बलराम गुप्ता
- हरिवंश राय बच्चन के काव्य में छायावादी प्रभाव 148-150
  कृपा शंकर
- भारत के गरीबी उन्मूलन में अल्पवित्त की भूमिका 151-155
  डॉ० शैलेन्द्र कुमार उपाध्याय
- **A study of Shattering Societal Mores and Values in 'The Lowland'** 156-161
  Dr. Arpana Kumari
- महात्मा गाँधी के सत्याग्रह सम्बन्धी विचार एवं उसकी वर्तमान में प्रासंगिकता 162-165
  डा० दीपशिखा चतुर्वेदी
- बनारस की विभिन्न विधाओं के विकास में अन्य घरानों की भूमिका 166-167
  डॉ० दीप्ति सिंह
- **Financial Impact of Enterprise Resource Planning Implementation in MSMEs of Uttar Pradesh** 168-178
  Mr. Narendra Gupta
  Prof. H. K. Singh

Impact Factor : 2.132

ISSN :- 2348-6228

बनारस की विभिन्न विधाओं के विकास में अन्य घरानों की भूमिका

डॉ0 दीप्ति सिंह*

काशी को भारतवर्ष का एक पावन तीर्थ स्थान माना गया है। अध्यात्म, धर्म, संस्कृति तथा विद्या का केन्द्र होने के साथ ही यह प्राचीन भारतीय संगीत का भी प्रमुख केन्द्र रहा है। इसलिए विभिन्न घराने के कलाकार दूर–दूर से यहाँ आये और इन्होंने काशी को ही अपनी साधना की केन्द्र भूमि बनाया। इन कलाकारों को काशी का यह वातावरण प्रत्येक दृष्टि से अनुकूल प्रतीत हुआ। यहाँ के इस परिवेश में रहकर इन्होंने 'काशी की संगीत–परम्परा' को आगे बढ़ाने का प्रयत्न किया, जिससे यहाँ की संगीत–विधा हर क्षेत्र में समृद्ध हो सकी।

बनारस की 'ध्रुपद–परम्परा' में दिल्ली के 'तानसेन घराने' का बहुत बड़ा योगदान माना जाता है। अठारहवीं शताब्दी के अन्त में तानसेन के वंशज तीन घरानों में विभाजित हो गये। उनके सबसे बड़े पुत्र सूरत सेन जयपुर में जा कर बस गये थे। तानसेन के सबसे छोटे पुत्र विलास खाँ ध्रुपद की शुद्ध बानी के विशेषज्ञ तथा रखाव के कुशान वादक थे। विलास खाँ के घराने और तानसेन के दामाद मिश्री सिंह के घराने में बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध रहा। मिश्री सिंह की वंश परंपरा में निर्मल साहू नाम के सुविख्यात वीणावादक हुए। इन दोनों घरानों के लोगों ने देहली छोड़कर बनारस को ही अपना निवास स्थान बनाया। ये संगीतज्ञ लखनऊ दरबार से भी सम्बन्धित थे।

काशी नरेश भी इन्हें अक्सर बुलाते थे। दिल्ली से भूपत खाँ लखनऊ से निर्मल शाह और नेपाल से मुहम्मद खाँ (बड़कू मियाँ) भी काशी में आकर रहने लगे। जफ़र खाँ ने सुरसिंगार नामक एक वाद्य का आविष्कार किया था। बनारस में इस वाद्य का प्रथम प्रदर्शन काशी नरेश महाराणा उदित नारायण सिंह के दरबार में हुआ। काशी नरेश तथा श्रोतागण उनके सुरसिंगार वादन से बहुत प्रभावित हुए।

बाद में जफर खाँ के भाई मिसिर अली खाँ तथा लड़के सादिक अली खाँ काशी नरेश के दरबारी गायक हो गये थे। इन्होंने बनारस में रहकर ध्रुपद तथा वीणा के कई कलाकार तैयार किये। आप लोगों के अच्छे शिष्यों में महेश चन्द्र सरकार और मिठाई लाल जी थे। इस तरह बनारस की ध्रुपद परम्परा में देखली तानसेन घराने का पर्याप्त योगदान देखने को मिलता है।

बनारस घराने का तबला सम्पूर्ण भारत में सर्वाधिक चर्चित रहा है। ऐसी मान्यता है कि बनारस घराने में तबले की विधा 'लखनऊ घराने' से आई है। बनारस में तबला वादन की परम्परा के प्रवर्तक पं0 रामसहाय जी ने तबले की शिक्षा लखनऊ घराने के उस्ताद मोदू खाँ से पाई। तबले के विद्वान उस्ताद मोदू खाँ से रामसहाय जी ने 12 वर्ष तक तबले की शिक्षा सेवा व लगन से प्राप्त की तथा तबले के ज्ञान का अपार भण्डार लेकर बनारस वापस आये।

पं0 रामसहाय जी ने बनारस में निम्न प्रमुख शिष्य तैयार किये यथा पं. जानकी सहाय, पं. राम शरण मिश्र, भगत जी तथा पं. परतप्पू महाराज इत्यादि। ये लोग धुरन्धर तबला–वादक के रूप में प्रतिष्ठित हुए तथा कुछ ही दिनों में 'बनारस घराने की पताका पूरे भारत में फहराने लगी। इस प्रकार तबले के क्षेत्र में लखनऊ तथा बनारस आपस में घनिष्ठरूप से सम्बन्धित रहे हैं।

नृत्य के क्षेत्र में लखनऊ के कथक नृत्याचार्य महाराजा बिन्दादीन के छोटे भाई कालका प्रसाद जी भी कथक नृत्य के महान कलाकार थे। आप इलाहाबाद की हंडिया तहसील छोड़कर काशी में रह गये, और अपने जीवन की अंतिम पड़ी तक काशी में रहकर अनेक शिष्य–शिष्याओं को तैयार किया। 'नेपाल' से चले आने के बाद पं. सुखदेव महाराज जी ने भी काशी को ही अपना निवास स्थान मान लिया तथा यहीं उनकी साधना भूमि रही।

मिर्जापुर के प्रसिद्ध सारंगी–वादक पं. शम्भूनाथ मिश्र जी काशी के भदोही तहसील में आकर रहने लगे। बाद में उनके वंशज भी काशी में बस गये। इन लोगों ने काशी की सारंगी परम्परा को आगे बढ़ाया।

'काशी की वाद्य–परम्परा में 'तेलियानाला' पराने का काफी योगदान है। तेलियानाला घराने के प्रमुख कलाकार उस्ताद वारिस अली खाँ बीनकार, उस्ताद निसार अली खाँ धुपदिये, उस्ताद सादिक अली खाँ ख्याल–गायक, उस्ताद अकबर अली खाँ टप्पा के महान गायक थे।

* एसोसिएट प्रोफेसर, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर